**डॉ. मीरा कुमारी**
**संस्कृत विभाग, सी. एम. जे. कॉलेज, खुटौना**
**ललित नारायण मिथिला विश्विद्यालय, दरभंगा, बिहार**
ईमेल आइडी - kmeera573@gmail.com
Mobile number- 6287538352

वर्ग- बीए पार्ट 1 (H) दिनांक - 21-05-2020

विषय- द्वितीय पत्र (श्रीमद्भगवद्गीता)

अनपेक्षः शुचिर्दक्ष उदासीनो गतव्यथः।

सर्वारम्भपरित्यागी यो मद्भक्तः स मे प्रियः।।16।।

अर्थ - जो पुरुष आकांक्षा से रहित, बाहर- भीतर से शुद्ध, चतुर, पक्षपात से रहित और दुःखों से छूटा हुआ है - वह सब आरंभों का त्यागी मेरा भक्त मुझको प्रिय है । ।16 ।।

प्रश्न- 'आकांक्षा से रहित' कहने का क्या अभिप्राय है?

उत्तर- परमात्मा को प्राप्त भक्तों का किसी भी वस्तु से किंचित भी प्रयोजन नहीं रहना, अतएव उसे किसी तरह की किञ्चिन् मात्र भी इच्छा, स्पृहा अथवा वासना नहीं रहती । वह पूर्ण काम हो जाता है। यह भाव खिलाने के लिए उसे आकांक्षा से रहित कहा है।

प्रश्न- इच्छा या आवश्यकता के बिना तो मनुष्य से किसी प्रकार की भी क्रिया नहीं हो सकती और क्रिया के बिना जीवन निर्वाह संभव नहीं, फिर ऐसे भक्तों का जीवन कैसे चलता है?

उत्तर-- बिना इच्छा और आवश्यकता की भी प्रारब्ध से क्रिया हो सकती है। अतएव उसका जीवन प्रारब्ध से चलता है। अभिप्राय यह है कि उसके मन, वाणी और शरीर से प्रारब्ध के अनुसार संपूर्ण क्रियाएं बिना किसी इच्छा, स्पृहा और संकल्प के स्वाभाविक ही होती रहती है। अतः उसके जीव उसके जीवन निर्वाह में किसी तरह की अड़चन नहीं पड़ती।

प्रश्न - भगवान् का भक्त बाहर भीतर से शुद्ध होता है, उसकी इस शुद्धि का क्या स्वरूप है?

उत्तर- भगवान के भक्तों में पवित्रता की पराकाष्ठा होती है। उसके मन, बुद्धि, इंद्रिय, उनके आचरण और शरीर आदि इतने पवित्र हो जाते हैं कि उसके साथ वार्तालाप होने पर तो कहना ही क्या उसके दर्शन और स्पर्श मात्र से ही दूसरे लोग पवित्र हो जाते हैं। ऐसा भक्त जहां निवास करता है ,वह स्थान पवित्र हो जाता है और उसके संग से वहां का वायुमंडल, जल, स्थल आदि सब पवित्र हो जाते हैं।

प्रश्न - दक्ष शब्द का क्या भाव है?

उत्तर- जिस उद्देश्य की सफलता के लिए मनुष्य शरीर की प्राप्ति हुई है, उस उद्देश्य को पूरा कर लेना ही यथार्थ चतुरता या दक्षता है । अनन्य भक्ति के द्वारा परम प्रेमी, सबके सुहृदं सर्वेश्वर परमेश्वर को प्राप्त कर लेना ही मनुष्य जन्म के प्रधान उद्देश्य को प्राप्त कर लेना है। ज्ञानी भारत भगवान् को प्राप्त होता है, यह भाव दिखाने के लिए उसको' 'चतुर' या 'दक्ष' कहा गया है ।

प्रश्न-- पक्षपात से रहित होना क्या है?

उत्तर-- न्यायालय में साक्षी देते समय अथवा पंच या न्याय कर्ता की हैसियत से किसी के झगड़े का फैसला करते समय या इस प्रकार का दूसरा कोई मौका आने पर अपने किसी कुटुंबी, संबंधी या मित्र आदि के लिहाज से या द्वेष से अथवा अन्य किसी कारण से भी झूठी गवाही देना, न्याय विरुद्ध फैसला देना या अन्य किसी प्रकार से किसी को अनुचित लाभ हानि पहुंचाने की चेष्टा करना पक्षपात है, इसे रहित होना ही पक्षपात से रहित होना है।

प्रश्न-- भगवान् का भक्त सब प्रकार के दुःखों से रहित होता है, इस कथन का क्या अभिप्राय है?

उत्तर -इस श्लोक में भगवान् का यही अभिप्राय है कि किसी भी प्रकार के दुःख -हेतु के प्राप्त होने पर भी वह उससे दुःखी नहीं होता अर्थात उसके अंतःकरण में किसी तरह की चिंता दुःख या सुख नहीं होता ।भाव यह है कि शरीर में रोग आदि का होना स्त्री -पुत्र आदि का वियोग होना और धन- क्रय आदि की हानि होना इत्यादि दुख के हेतु तो प्रारब्ध के अनुसार उसे प्राप्त होते हैं परंतु इन सब के होते हुए भी उसके अंतःकरण में किसी प्रकार का विकार नहीं होता है

प्रश्न -'सर्वारम्भपरित्यागी' का क्या भाव है?

उत्तर--संसार में जो कुछ भी हो रहा है सब भगवान की लीला है सब उनकी माया शक्ति का खेल है वे जिससे जब जैसा करवाना चाहते हैं वैसा ही करवाते हैं मनुष्य ही ऐसा अभिमान कर लेता है कि अमुक कर्म में करता हूं मेरी ऐसी सामर्थ है इत्यादि पर भगवान का भक्त इस रहस्य को भलीभांति समझ लेता है। इससे वह सदा भगवान के हाथ की कठपुतली बना रहता है भगवान उसको जब जैसा ना चाहते हैं वह प्रसन्नता पूर्वक वैसे ही नाश्ता है अपना तनिक भी अभिमान नहीं रखता और अपनी ओर से कुछ भी नहीं करता इसलिए वह लोग दृष्टि में सब कुछ करता हुआ अभी वास्तव में करता पन के अभिमान से रहित होने के कारण 'सर्वारम्भपरित्यागी' ही है ।